अदोषदर्शी

भगवान् सच्चिदानन्द विग्रह हैं और जो जीव इस आनन्द के विग्रह को भी आनन्द देता है, वह खुद कितना आनन्द में रहता होगा? आनन्दमूर्ति को आनन्द प्रदान करना, यह भक्त अपने गुणों से करता है। हम सोच सकते हैं कि भक्त किस उच्चतर आनन्द की अवस्था में रहता होगा। हम सब भगवान् से भीख माँगते हैं-'हमें आनन्द दो।' जिसके पीछे भगवान् भीख माँगते हैं, अपने कार्य सिद्धि के लिए, उसे भक्त कहते हैं। 'मंजरी'..., हमारे यहाँ पर भक्त मतलब मंजरी..., किस अवस्था में रहते होंगे सदैव? हम सब..., को भी तीव्रता से सही रुप से भक्त बनना चाहिए। तभी हम आनन्दी होंगे, आनन्दमय रहेंगे, जो हम चाहते हैं।

हरिनाम सब करते हैं, कुण्ड स्नान इत्यादि, दीक्षा ग्रहण सब करते हैं परन्तु सब आनन्द में नहीं रहते। अनेकों भक्त हैं जो सत् परम्परा से ग्रहण करते हैं दीक्षा, फिर भी आनन्दी नहीं रहते, ऐसा क्या कारण है? आज इसके एक पहलू पर विचार किया जाएगा।

भगवान् हर चीज़ की Supreme Positivity की last limit हैं। भगवान्, Positive to the power of infinity... that is God. भगवान् के भक्तों में गुण होते हैं वही हमें स्वयं के जीवन में अंगीकार करने हैं, तभी हम खुश रह पाएँगें। अच्छा व्यक्ति 'अच्छा' किसलिए कहलाता है? अपने गुणों की वजह से। भक्त 'भक्त' क्यों कहलाता है? अपने गुणों की वजह से, यह नहीं कि कंठी डाली और कोई भी आचरण करें तो हम भक्त होंगे। कंठी डालने के बाद भी कई, कुछ आचरण करने के बाद हमें आसुरी प्रवृत्ति का ही कहा जाएगा।

जो भगवान् का भक्त होता है उसमें एक बहुत ही प्राथमिक गुण होता है, जिसके लिए उसको प्रयत्न भी नहीं करना पड़ता। वह गुण होता है "अदोषदर्शी"। वह किसी में दोष नहीं देखता..., विद्यमान रहने पर भी..., किसी में भी दोष... दोष किस में विद्यमान नहीं है? ब्रह्मा में भी हैं। चींटी से लेकर ब्रह्मा तक सभी दोष युक्त हैं परन्तु संत क्या है? "अदोषदर्शी"। वह किसी भी अवस्था में जीव के गुण ही देखता है, दोष नहीं देखता। इसी वजह से वह हमेशा आनन्द में रहता है।

आनन्द में यदि जीव रहना चाहता है इस जगत में तो जिससे भी मिलेगा, उससे किस प्रकार का व्यवहार वह चाहेगा? अच्छा आदान-प्रदान हो, प्रेममय आदान-प्रदान हो, "As you sow so shall you reap" तो यदि... vibrations positive नहीं जाएँगी आपकी ओर से तो आपको क्या मिलेगा? आपको positive vibrations मिल सकती हैं? कदापि नहीं। तो यदि हम दोष देखेंगे किसी का भी, अगर उससे हम मिलेंगें या बात भी करेंगें तो

vibrations कैसी जाएँगी हमारी ओर से? Negative vibes जाएँगी, दुर्गन्ध, बदबू युक्त हमारे से, हमारे शब्दों में भले ही बहुत सुंदरता हो, वो तो vibrations जो हैं, वो बहुत गंदी जाएँगी। गंदी चीज़ कहीं से भी जाएगी तो किसको सबसे पहले, touch करेगा गंदगी? खुद को, क्योंकि जा कहाँ से रही है? आपसे होकर जा रही है। किसी pipe में कीचड़ वाला पानी किसी ओर में डालने से पहले, सबसे पहले किसको प्राप्त होगा? Pipe को।

जैसे हमने बताया आनन्द, भगवान् Supreme Positive हैं, positivity की आखिरी limit. और जो दोष देखना है यह negative है, negative element है। तो negative चीज़ के साथ जुड़े हुए, आप positive के साथ कैसे जुड़ सकते हो? सरल सी बात है। आपको क्या चाहिए? आनन्द..., वो positivity की last limit है और आप negative के साथ, you are hung on to the negative, दोष।

देखिए, हम इस जगत में केवल एक ही कार्य के लिए आए हैं - Self-purification! Self-purification और Self-purification...! दूसरा कार्य कोई नहीं है। जबकि हर समय हम अन्दर से, भीतर से क्या हैं? Self-glorification... self-glorification और self-glorification. अन्दर, हमेशा एक ही तानपुरा बज रहा है, self-glorification का, कि 'मैं कितना अच्छा हूँ, सब लोग समझते नहीं हैं'। इसके अलावा कोई तानपुरा नहीं बजता अन्दर, हरे कृष्णा तो कोई... कहीं पर भी नहीं है। बस 'I am, I am so good'... self-glorification! जबकि हर समय क्या होना चाहिए तानपुरा? Self-purification. मुझे यह जीवन का प्रथम क्षण मिला है self-purification के लिए। अंतिम क्षण, अंतिम क्षण भी मिला है किसलिए? Self-purification के लिए। और बीच के क्षण भी किसलिए मिले हैं? सिर्फ़ self-purification के लिए।

जब purification करनी है मतलब हमनें positivity में आना है, तो अगर हम किसी के दोष को, अगर हम देखेंगें, उस पर attention, उस पर ध्यान देंगे, तो दोष तो भक्त नहीं देखते और भक्त ही खुश रहते हैं। केवल भक्त खुश रहते हैं। संसार में और कोई खुश नहीं रहता। तो अगर हम खुश रहना चाहते हैं, अपने ऊपर कृपा करना चाहते हैं, तो हम को दोष देखना बंद करना चाहिए, किसी में भी दोष नहीं देखना चाहिए। दोष देखते ही आप, आप negativity से जुड़ गए। दोष देखते ही आप human emotions से जुड़ गए। जबकि what we want is, 'I, the soul, I want something which is beyond 84 lakh species'. सुना था आप सबने? हम ऐसी वस्तु चाह रहे हैं, जो ८४ लाख योनियों से परे है। परन्तु दोष देखना जो है, human emotions में आएगा, यह ८४ लाख योनियों के अन्तर्गत आएगा। इन योनियों के अन्तर्गत कोई भी चीज़ अगर आप करेंगे, जुड़ेंगे, उससे

आपको कुछ भी मिल सकता है, आनन्द के अलावा। और आप चाहते क्या हो? आनन्द, आनन्द और केवल आनन्द..., और वो मिलेगा self-purification से।

दोष देखना, निन्दा करना, criticize करना, negative सोचना, negative बोलना, गलत सोचना किसी भी व्यक्ति के बारे में, यह हमारे लिए हानिकारक है। हानिकारक क्यों है? यह disastrous है, यह एक दोष देखना..., torture है। दूसरे के लिए नहीं जिसको, जिसके देख रहे हैं..., खुद के लिए, दोष देखना self-torture है। क्योंकि आप भी आनन्द से इससे दूर हो जाते हो, आपने दोष देखा नहीं आप आनन्द से अलग हो गए।

देखिए, without feeling connection with Guru and Gauraṅga, a jīva cannot be Happy! गुरु से, गौरांग से connection अनुभव न हो तो, जीव खुश नहीं रह सकता। ध्यान दीजिएगा, इन बातों पर। एक बात समझ लीजिए हमेशा के लिए, पिछली बार भी बताया था हमने...। भगवान् से, गुरु से connection कैसे होता है? सेवा के माध्यम से। सेवा ही सार है, और सेवा अकेले रहकर तो की नहीं जाती है। भक्तों के साथ रहकर की जाती है। अगर सेवा नहीं करेंगे तो काई सम्बन्ध रहेगा? बताइए, कोई भी सम्बन्ध रहेगा? घर में पत्नी जो है पति की सेवा करें तो ही तो, सेवा कर रही है, तो ही तो सम्बन्ध रह रहा है। नहीं तो वह बोले, "मैं अपने में बैठी हूँ मैं, मैं कुछ नहीं करुँगी।" तो सम्बन्ध रहेगा? या बच्चों की सेवा माँ बाप करें..., कुछ भी नहीं करें तो सम्बन्ध नहीं रहेगा। तो कोई भी सम्बन्ध जो है रहता है सेवा के माध्यम से। तो यदि गुरु और गौरांग से अगर हम सम्बन्ध feel नहीं करेंगे तो हम खुश नहीं रह सकते। हम दुःखी हैं क्योंकि हम गुरु और गौरांग से सम्बन्ध अनुभव नहीं कर पा रहे। Direct सम्बन्ध है हमारा, इतना intimate सम्बन्ध हैं, इतना close है सम्बन्ध।

सेवा ही सार है और सेवा किसके साथ रहकर करनी होती है? भक्तों के साथ। और यदि हम भक्तों में दोष देखेंगे तो क्या सेवा कर पाएँगे? उनके दोष पर हमारा ध्यान जा रहा है, उनके गुणों पर नहीं जा रहा तो अगर उनके साथ रह रहे हैं, तो vibes कौन सी निकलेंगी? Negative! जब आपकी negative vibes निकलेंगी तो आप कितनी देर तक साथ में रह पाओगे? हम सेवा ही नहीं कर पाएँगें तो सम्बन्ध ही अनुभव नहीं होगा- गुरु से, गौरांग से। सेवा तो भक्तों के साथ रहकर की जाती है। और यदि हमारी दोष देखने की आदत है, तो हम साथ में रहकर, रह ही नहीं सकते।

सेवा करे बिना सम्बन्ध अनुभव नहीं होगा, सम्बन्ध अनुभव हुए बिना आनन्द, आनन्द नहीं मिलेगा और जब तक दोष देखते रहेंगे तो सेवा कर ही नही पाएँगे, दुखी रहेंगे हमेशा।

अच्छा एक बात बताइए, भक्ति के कितने अंग होते हैं? भक्तिरसामृत सिन्धु में कितने अंग बताए हैं? ६४... इसमें से एक (१) अंग है दोष देखना। अच्छा, भगवद् गीता में १६वें अध्याय में प्रथम ४-५ श्लोक में बताया गया है, दैवी गुणों के बारे में, इसमें एक में भी बताया गया कि भक्तों के दोष देखना दैवी गुण है? Divine Quality है? दोष न देखना Divine Quality है। यह भगवान् का सिद्धान्त है, दोष न देखना। Not seeing faults is Divine, seeing faults is human, is demoniac. Not seeing flaws is Divine..., किसी में दोष न देखना।

जब हमें मालूम होगा कि मैं सिर्फ self-purification के लिए इस जगत में आया हूँ तो क्या मुझे किसी और चीज़ के लिए फुरसत होगी, अपने आपको शुद्ध करने के अलावा? बताइए, हमारा एक ही कार्य क्या होगा? मैं शुद्ध हो जाँऊ किसी तरह, मैं शुद्ध कैसे हो सकता हूँ? I should see the good qualities in Devotees and try to become the servant of those good qualities . भक्तों से हमारा सम्पर्क होता है, उनमें केवल गुण देखें और गुणों को अंगीकार करने की हमारी एकमात्र चेष्टा होनी चाहिए..., केवल भक्तों के गुणों को अंगीकार। क्यों करना है? अगर अंगीकार करूँगा तो ही तो मैं भक्त बनूँगा, और भक्त बनूँगा तो ही तो खुश रहूँगा। अगर आप भक्तों के साथ हैं और उनके गुण अंगीकार नहीं करना चाहते, zero पर तो कोई रहेगा नहीं। या तो हम उनके प्रति कृतज्ञता से उनके गुणों में लिप्त रहेंगे या उनके दोषों का चिन्तन करते रहेंगे निरन्तर।

संसार में प्रलय कब आती है? अभी कलियुग कितने हज़ार साल हो गए हैं? ५०००! कब प्रलय आनी चाहिए? लगभग, ४ लाख २७ हज़ार साल बाद प्रलय होना चाहिए। परन्तु, प्रलय अभी भी आ सकती है यदि भगवान् और भक्त हमारा जैसा दृष्टिकोण रख लें। दोष देखने वाला। देखो, अगर आप दोष देख रहे हो तो क्या उसकी सेवा करना चाहोगे व्यक्ति की? आप उसे अपना कुछ देना चाहोगे? नहीं न...? यदि भगवान् भी ऐसा सोच लें और भक्त भी ऐसा सोच लें तो? भगवान् को कितने लोग गाली नहीं देते, सोचें, "तू मेरे अन्दर दोष देख रहा है? तुझे पानी कौन देता है, 'मैं', नहीं दूँगा, जल कौन देता है, 'मैं', नहीं दूँगा, हवा कौन देता है? नहीं दूँगा।" तो प्रलय आने में कितनी देर लगेगी?

भक्त, हमारी सारी चीज़े जानते हुए हमसे प्रेम करते हैं। भगवान् हमारे सारे अवगुणों को जानते हुए हमसे प्रेम करते हैं। अगर वो भी हमारी तरह हो जाए तो प्रलय हो जाएगी, संसार बचेगा नहीं। हमें उनकी तरह होना हैं, भक्त की Government और भगवान् की Government कैसी होनी चाहिए? एक होनी चाहिए। दो Government थोड़ी न होती है, अलग-अलग। भगवान् कभी भी दोष नहीं देखते, किसी भी अवस्था में, किसी का भी। बहुत खराब गुण भी हो किसी में तब भी भगवान् उसके अवगुणों पर विचार नहीं करते, उसके गुणों पर ही मोहित हुए रहते हैं। भगवान् अपने भक्त के गुणों पर मोहित हुए रहते हैं। और भगवान् अपने भक्तों के गुणों की चर्चा करते हैं सर्वदा, अवगुणों की नहीं। यदि हम खुश रहना चाहते हैं- positivity, आनन्द positivity को कहते हैं। आप negativity के साथ चिपके हुए हो, तो आनन्द कैसे मिलेगा आपको?

भगवान् का भक्त जो है, वो धाम में..., जितने भी भक्त हैं, एक भी व्यक्ति है किसी भी धाम में, भगवान् वराह के, वैकुण्ठ धाम में, भगवान् वामन के, अयोध्या में, द्वारका में, गोलोक में, कोई भी भगवान् भगवद् तत्व या भक्त ऐसा है जो दोष देखता हो? एक भी है? हम किसके रागानुगा भक्त हैं? बताइए? शिशुपाल के वंशज है क्या हम? जो दोष देख रहे हैं। आपकी परम्परा शिशुपाल से शुरु होती है क्या? हमारी तो भगवान् से शुरु होती है।

हमने तो विकट से विकट परिस्थिति में चिन्तन भी नहीं किया किसी का, दोष का..., बोलना तो दूर की बात है। क्योंकि मालूम है इससे हमारा स्वयं का नुकसान है। जो कोई भक्त नहीं करता वो हम क्यों करें आचरण?

वैष्णव सदाचार, अगर व्यक्ति सदाचारी ही नहीं है तो खुश कैसे रहेगा? सदाचार का मतलब क्या है? सदा-आचरण, जो आचरण हमेशा किया जाए उसे सदाचार कहते हैं। क्या दोष देखना या दोष बोलना कभी भी, यह..., यह भक्त का आचरण हो सकता है? यह सदाचार भगवान् के धाम में कोई भी करता है? तो सदा तो नहीं होता यह आचरण, यह तो कदाचार है। कभी-कभी जो बेवकूफ़ होते हैं वो करते हैं। भगवान् के धाम में एक व्यक्ति भी एक क्षण के लिए भी किसी का दोष नहीं देखता, सोचता नहीं है, एक क्षण के लिए भी, इसे सदाचार कहते हैं। अगर आप वहाँ जाना चाहते हो तो वैसे ही गुणों से युक्त होना होगा। आप कहते हो कि, 'भगवान् के दर्शन करने हैं'..., बताओ, मल से, मल के साथ चिपक कर तो अमल के दर्शन, अमल कृष्ण के दर्शन होंगे नही। हम तो मल से जुड़ रहें हैं और अमल कृष्ण हैं "वो"।

किसी में दोष देखना यही सबसे बड़ा दोष है..., सबसे बड़ा दोष है यह, किसी में दोष देखना। यह सबसे बड़ा self-torture है। यह सबसे बड़ा पाप है। पाप का क्या परिणाम होता है? पाप का क्या परिणाम होता है? दुःख। तो जब तक किसी में दोष देखेंगे हम सुखी नहीं हो सकते, हमेशा दुःखी रहेंगे।

पानी का क्या धर्म होता है? गीला करना। आग का क्या धर्म होता है? गरमाहट होना। जीव का यानि भक्त का क्या धर्म होता है? निरन्तर, २४ घंटे अति-स्नेहपूर्वक आचरण करना, यह जीव का धर्म है, धर्म है यह। ऐसा नहीं है कि अगर हम अति-स्नेहपूर्वक आचरण करें किसी पर एहसान कर रहे हैं, नहीं। यह आपका स्वरूपतगत धर्म है हर एक से, हर एक से, अति-स्नेहपूर्वक आचरण करना, हर एक से। हम बोलते हैं 'हमारे गुरु जी ने हमारे को बोला अति-स्नेहपूर्वक'..., अरे! गुरु जी ने तुम्हें नहीं बोला। गुरु जी तो वो कर रहे हैं, 'अपोहनम् च', जो आप भूले, आपको याद दिला रहे हैं कि भई आप तो जीव हो, जीव मतलब भक्त भगवान् के,

"जीवेर स्वरूप हय नित्य कृष्णदास।
कृष्णेर तटस्था शक्ति भेदाभेद प्रकाश।।"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत् मध्य लीला २०.१०८)

भगवान् का जो भक्त होता है वह हमेशा अति-स्नेहपूर्वक आचरण करता है, हमेशा, हर परिस्थिति में।

हम कोई, किसी पर favor नहीं कर रहे, अति-स्नेहपूर्वक... वह बोलते हैं, 'मेरे को अति-स्नेहपूर्वक..., इसका मतलब मेरे को अति-स्नेहपूर्वक आचरण करना है।' कई भक्त लोग Lecture हमारा सुनकर ऐसे बोलते हैं 'मेरे को करना है।' मेरे को उन पर तरस आता है, तुमने क्या समझा मेरा..., प्रवचन को?

तुम्हारा अति-स्नेहपूर्वक आचरण... तुम्हारा स्वरूप है, पानी सोचे कि, 'मैंने किसी को गीला करना है।' तुम पानी हो ही इसलिए क्योंकि तुम गीला करते हो। आग सोचे, 'मैंने किसी को..., मेरे से गरमाहट' तुम आग हो तो गरमाहट के अलावा और क्या होगा? अति-स्नेहपूर्वक आचरण भक्त का धर्म है-Nature. चीनी का क्या धर्म है? मिठास। भक्त का धर्म ही है अति-स्नेहपूर्वक आचरण। यह हम किस परिपेक्ष में बोल रहे हैं, अगर आप किसी के दोष देखते हो तो आपसे तो vibes ही negative जाएँगी, तो आप अति-स्नेहपूर्वक आचरण कैसे कर सकते हो?

आप किसी के दोष, किसी में कोई दोष..., पता नहीं हो भी न, आपने manufacture कर लिए हो, उसकी वजह से आप अपने स्वरूपगत धर्म से, अपने आनन्दमय धर्म से विच्युत हो रहे हो, तो किसका नुकसान कर रहे हो? अपना। मेरा थोड़ी न कुछ favor कर रहा है कोई व्यक्ति, अगर अति-स्नेहपूर्वक करेगा आचरण या सब भक्तों से करेगा बात, तो अपने ऊपर favor है, it is Self-Blessings. आप तो Self-Blessings कर रहे हो अति-स्नेहपूर्वक आचरण करके। You are not doing favor to anyone, अपने स्वरूप में स्थित होना कोई favor है किसी के ऊपर? कोई favor नहीं है।

मेरी जो सेवा है गुरु व गौरांग के प्रति, उसमें इन्द्र का पद भी आ जाए... मेनका, उर्वशी, अपसरा भी आ जाए तो वो भी नहीं। कोई भी हमारे बीच में बाधक, बीच में नहीं आना चाहिए..., मेरी, मेरे गुरु की सेवा के बीच में। मेरी, मेरे गौरांग की सेवा के बीच में..., कोई बीच में आना नहीं चाहिए। कोई भी..., इन्द्र का पद भी नहीं आना चाहिए, ब्रह्मा का पद भी नहीं आना चाहिए बीच में। एकदम free flowing होनी चाहिए। और हमारी तो इतनी पतित है अवस्था कि हमारे गुरु गौरांग की सेवा के बीच... जब तक हम अति-स्नेहपूर्वक आचरण नहीं करेंगे, भक्तों के साथ अच्छी तरह gel नहीं करेंगे, सेवा नहीं करेंगे, तो हम गुरु गौरांग की सेवा नहीं कर रहे और यदि दोष देख रहे हैं तो सेवा नहीं हो पाएगी। तो हम, किसी के दोष ही हमारे, हमारी सेवा, गुरु की सेवा के बीच से किसी के दोष आ जाते हैं..., जिस की वजह से हम अपनी सेवा से विच्युत हो जाते हैं। मेरी भाषा समझ रहे हैं आप लोग कुछ? आ रहा है समझ, कोई भी चीज़ भी?

There should be no block in my service to Guru and Gauraṅga, someone's faults you are meditating and it is becoming block in your service to Guru and Gauraṅga..., you are getting my point? Fault किसका? किसी और का। नुकसान किसका हो रहा है? तुम्हारा। तुम क्यों सोच रहे हो? तुम्हें भक्ति के ६४ अंग में बोला है या गुरु ने personal sevā दी कि तुम दोष देखो, negative बोलो, negative सोचो, गलत सोचो?

दैवी गुणों में, भगवद् गीता में बताया गया है १६वें अध्याय में "अपैशुनम्", अपैशुनम् मतलब aversion to fault finding, यह दैवी गुण है, Divine Quality है। अपैशुनम् - aversion to fault finding. Not seeing faults is Divine..., Divine, दिव्यता है यह। किसी में दोष न..., यह दिव्य, दिव्य पुरुषों का लक्षण है। किसी में..., किसी में दोष नहीं देखते, और जो दोष ही देखते हैं, दोष ही बोलते हैं, वह आसुरी प्रवृत्ति के हैं। भले माला झोली डाली हो या मंजरी भाव हो या प्रणाली सब हो गई हो उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, आसुरी है वह व्यक्ति।

जो व्यक्ति निन्दा करता है भक्तों की वो व्यक्ति मरने के बाद गोलोक नहीं जाता, 'महारौरव' नाम के नरक में जाता है अपने पितृकुल के साथ, समझें? यदि आनन्द नगर जाना है, भगवान् के नगर, भगवान् के पास, आनन्द धाम, आनन्द नगर, तो आपको दोष नगर से बाहर निकलना होगा।

बिना सेवा के जीव खुश नहीं रह सकता, ठीक हैं? अब हम जो गौड़ीय हैं..., आपको दोष दर्शन की, दर्शन के बारे में बताएँगे कि, जो गौड़ीय है यानि की हम, गौड़ीय वैष्णव, हम कृष्ण के दर्शन भी नहीं करना चाहते बिना राधारानी के, कृष्ण दर्शन भी हमारे लिए अवांछित है। राम दर्शन तो छोड़ दो, भगवान् राम के दर्शन गौड़ीय नहीं करना चाहते। द्वारकानाथ, द्वारका नहीं जाना चाहते, जहाँ शुद्ध भक्त वहाँ पर कथा कर रहें हो। रघुनाथ दास गोस्वामी कहते हैं, "मैं द्वारका नहीं जाना चाहता तब भी", कृष्ण के दर्शन नहीं करना चाहते, नारायण के दर्शन नहीं करना चाहते जो गौड़ीय वैष्णव है, बिना राधारानी के,

"आमार ईश्वरी वृन्दावनेश्वरी।
ताँर प्राणनाथ... ताँर प्राणनाथ होबे तब भजे गिरिधारी।।"

मेरी ईश्वरी तो स्वामिनी जी हैं, किशोरी जी हैं, उनके प्राणनाथ हैं इसलिए मैं कृष्ण दर्शन कर रहा हूँ नहीं तो मुझे कृष्ण में रुचि नहीं हैं कोई भी। मुझे रास नहीं करना कृष्ण से, मुझे कोई खेलना नहीं है, सखा नहीं हूँ, न मुझे लालन-पालन...। यह तो किशोरी जी के प्राणनाथ हैं इसलिए इनकी मैं सेवा में..., इनके दर्शन कर रही हूँ, नहीं तो, वैसे दर्शन करने का लोभ नहीं है। ठीक है जी? जब कृष्ण दर्शन ही गौड़ीय नहीं करना चाहते तो जीव के दोष दर्शन निरन्तर कर रहे हैं... इससे घटिया, पतित अवस्था और क्या हो सकती है गौड़ीय वैष्णव के लिए?

जो कृष्ण के दर्शन नहीं चाहता, बिना स्वामिनी जी के तुम जो है दोष दर्शन कर रहे हो, तुम में अकल नहीं है बिल्कुल...? अपने पाँव पर रोज़ सुबह उठते कुल्हाड़ी मारते हो। फिर ५ मिनट बाद फिर कुल्हाड़ी पर कुल्हाड़ी, ए कुल्हाड़ी पाँव पर रखके ही बैठे हो, पाँव काट के ही रहूँगा, एक कदम नहीं चलूँगा। सारी कृपा हो जाए कुल्हाड़ी लेकर बैठेंगे। बताओ कृष्ण दर्शन नहीं करता गौड़ीय तुम दोष दर्शन करते हो, दिमाग नहीं है क्या?

बोलते हो... चुगली, negative बात बोलना, सोचना, किसी के लिए नहीं सोचनी। अपैशुनम् मतलब किसी के भी बारे में negative न बोलना, सोचना। और हम तो यहाँ,

यह संतो के, सबसे उन्नत संतो के समाज में बैठ के हम negative सोच लेते किसी के भी, बोल भी देते हैं..., बेझिझक होकर। पितृकुल के साथ महारौरव में नगर बसाने का इरादा है क्या? पूरा block खुद खरीदना है क्या? महारौरव का।

"गंगार परश हैले पश्चाते पावन।
दर्शने पवित्र करो एइ तोमार गुण।।"
(प्रार्थना १९ - श्रील नरोत्तम दास ठाकुर)

दर्शन से पवित्र कर रहे हैं और हम उस व्यक्ति में दोष देख रहे हैं।

सेवा ही नहीं कर पाएँगे negative vibes जाएँगी हमसे।

देखो, महापापी से भी महापापी जो व्यक्ति होता है, उसने meat खाया हो, शराब पी हो, कुछ भी किया हो, महागंदा व्यक्ति भी है अगर वो हरि के आश्रय लेता है तो उसके अपराध सारे माफ़ कर दिए जाते हैं। सारे पाप, गंदे से, आपने घिन..., गंदा से गंदा काम क्यों न किया हो।

हरि के आश्रय लेने पर और हरि का सबसे करुणामय क्या रूप है जो जीव का उद्धार करता है? "हरिनाम"। भगवान् तो हमारे जिह्वा पर, भगवान् तो साक्षात् नहीं देख पाते, भगवान् के नाम का उच्चारण कर पाते हैं। और हरिनाम जो है हमारा सबसे बड़ा मित्र है, भगवान् का नाम, मित्र, Best Friend..., हरिनाम। परन्तु हरिनाम के प्रति यदि अपराध हो जाए, नामापराध जिसे कहते हैं, फिर जीव के लिए कोई परित्राण नहीं है। हरि के प्रति अपराध हो जाए तो, तो भी हरिनाम लेकर हरि के प्रति अपराध माफ़ हो जाते हैं, भगवान् के प्रति। परन्तु हरिनाम के प्रति यदि अपराध हो जाए तो कैसे परित्राण होगा? हरिनाम के प्रति..., जब भगवान् के जो भक्त है अगर उसके बारे में हम दोष सोचते हैं या उसकी निन्दा करते हैं तो यह क्या माना जाता है? क्या माना जाता है? नामापराध..., प्रथम नामापराध। क्यों माना जाता है? की तो वैष्णव की निन्दा पर नामापराध क्यों माना गया? क्यों? साधुगण के द्वारा ही तो जो हरिनाम है पूरे विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। हरिनाम कैसे प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है पूरे विश्व में? उन्हीं साधुओं के द्वारा जो पूरे विश्व में इसको लेकर जा रहे हैं, उन्हीं के माध्यम से तो हरिनाम प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है। जो हरिनाम को सबको दे रहे हैं..., हरिनाम अपनी वाणी द्वारा, अपने आचरण द्वारा, सारी दुनिया को दे रहे हैं तो वो हरिनाम कैसे सहेगा, एक क्षण के लिए भी अपराध..., उस व्यक्ति के प्रति जो हरिनाम पूरे विश्व में फैला रहे हैं? कैसे हरिनाम सह सकता है, बताइये? इसे महद् अपराध कहते है, महाविनाशक।

जो हरिनाम का प्रचार कर रहे हैं मधुर नाम का, मंजरी नाम का, उनके प्रति अपराध..., एक क्षण के लिए भी negative सोच लेना, व्यक्ति अपने कुल के साथ पूरा बरबाद हो जाएगा।

बाबा बहुत सुन्दर बता रहे हैं कि अनेक लोग सोचते हैं कि यदि साधु गलत कार्य करें, निन्दनीय कार्य करें तो उसके बारे में बोलेंगे तो कोई अपराध नहीं होगा, उसने तो किया ही गलत कार्य है। ऐसा बाबा कह रहे हैं, कई लोग ऐसा सोचते हैं कि 'गलत कार्य है तो बोल दो, तो भी अपराध..., हम तो सच बोल रहे हैं। यह तो निन्दा नहीं है, ऐसा logic'... भगवान् कह रहे हैं, बाबा कह रहे हैं, ऐसा कई लोग सोचते हैं परन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं, यह अपराधजनक है। श्रीधर स्वामी टीका में कह रहे हैं, *"निन्दनं दोष कीर्तनम्"*, *"निन्दनं दोष कीर्तनम्"*, किसी के दोष के बारे में बोलना, यह निन्दा है। किसी के भी दोष के बारे में, यह नहीं कि अपने गुरु के बारे में, गुरु के दोष..., यह बात नहीं कही जा रही। किसी के भी दोष के बारे में बोलना। यहाँ पर ऐसे बहुत संत हैं, जो पूरे विश्व का कल्याण करेंगे और हम, मैं देखता हूँ कि कुछ भी कोई बोल देता है, कुछ भी, झिझकता ही नहीं हैं। तो यह हरिनाम के प्रति अपराध है।

आगे बताते हैं कि मान लो दोष है, पहली बात तो कई बारी दोष होता नहीं है हम को लगता है कई बारी..., दोष है, और अगर है भी सही तो आपको क्या गुरु ने सेवा दी है या भगवान् ने सेवा दी है कि दोष का कीर्तन करो औरों के सामने? Meditate, ध्यान किसका किया जाता है? भक्तों के गुणावली का। कोई ग्रन्थ में बताया है कि भक्तों के दोषों का ध्यान करो? इससे आपको क्या लाभ होगा बताओ? अगर कोई सूचना भी देता है किसी के भक्त के दोष की किसी और को, सूचना भी देता है, तो उसमें वो दोष संक्रमित, उसमें वो दोष आ जाता है।

सोचिए क्या-क्या भीषण..., एक तो आनन्द तो मिलेगा नहीं, क्योंकि आप मनुष्यों के कार्य से जुड़ रहे हो। निन्दा करना तो मनुष्य का कार्य है। और आनन्द क्या है? अमनुष्य है। अब अगर कोई सोचे कि हाँ गलत है तो हमको बोलना, नहीं। तब भी क्या है? *"निन्दनं दोष कीर्तनम्... "*, दोष का कीर्तन मतलब दोष के बारे में बोलना इसे निन्दा कहा जाता है। और सोचोगे तो बोलोगे तो पक्का ही क्योंकि सोच रहे हो। अगर बच्चा सही कार्य नहीं करेगा तो गलत तो करेगा ही करेगा। तो निरन्तर भक्तों के गुणों का ध्यान करना चाहिए, क्यों? उनके गुणों का ध्यान करोगे तो ही तो जिस चीज़ का बार-बार ध्यान करूँगा,

"यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।"

(गीता-८.६)

तुम जिस-जिस का, जिस भाव का चिन्तन करते हो, अंत में तुम्हें वो भाव प्राप्त हो जाएगा। तुम उनके गुणों का चिन्तन करोगे तुम्हें गुण प्राप्त हो जाएँगे और दोष का करोगे तुम भी वैसे ही बन जाओगे।

तुम बोलोगे, "हैं तो सही...", अच्छा। आपकी बात सही है। आप जाते हो market में खरीदने मान लो juice, इतनी सारी दुकाने हैं, आप कहो, "इतनी सारी दुकाने हैं, इनको सोचूँ... meditate नहीं करुँगा?" यह कोई बात हुई? क्या करते हो? जो चाहिए था वो ले कर आ गए, बस। किसी पर meditate कर रहे हो? आई-गई, दृश्य आया, दृश्य गया। वैसे ही सब लोगों के..., भक्तों के so-called दोष भी आया-गया। तुम्हें क्या चाहिए था? भक्त का गुण, तुम अपने focussed रहो न।

When you focus on faults, you are not focussed! That is why you focussed on faults. If you are focussed, then you will focus on Qualities. Because you focussed on faults, it.. it.. it clearly proves you are not focussed. You are stupid.

उसके बाद आकर अपने Mentor को, "पता है यह, पता है यह... यह... यह... यह प्रभुजी, प्रभुजी, प्रभुजी, माताजी... माताजी, माताजी।" यह तुम क्या करने गए थे? तुम तो self-purification के लिए आए थे संतो के समाज में, फिर वही करना शुरु हो गए।

बलदेव विद्याभूषण कहते हैं कि *अपैशुनम्* का मतलब है कि किसी की भी निन्दा नहीं करना, किसी भी जीव की..., कुछ भी कोई गलत कार्य कर रहा है, तुमको नहीं बोलना। तुम अपनी जीभ, अगर कोई गलत कार्य कर रहा है, तुम बोल रहे हो तो सबसे पहले गंदी क्या हो रही है? तुम्हारी जीभ। तुम क्यों बोल रहे हो? तुम क्यों, तुम्हारी सेवा है यह, धाम में सेवा है तुम्हारी निन्दा करना या गुरु ने तुम्हें यहाँ सेवा दे दी है?

अब वाल्मीकि हैं, क्या बोलते हो, वाल्मीकि ने रामायण लिखी, क्या बोलते हो कि वो डाकू थे? किस..., किस चीज़ से याद करते हो? गुणों की वज़ह से। कभी किसी संत का past नहीं देखना चाहिए, कभी नहीं..., न बोलना चाहिए एक भी चीज़। आपको करना क्या है? आप यहाँ self-purification के लिए हो। Self-purification मतलब उनके गुणों को देखकर वो लालसा हो कि यह गुण मुझ में आ जाए और जितना उनका चिन्तन

करोगे, उतना उनका कीर्तन करोगे उतना आप में आएगा। जो चीज़ सोचोगे, बोलोगे वो ही तो बनोगे।

बलदेव विद्याभूषण कहते हैं कि जिस प्रकार चाँद में धब्बा होता है पर चाँद तो चाँद ही रहता है। बोलते हैं न, "तुम्हारा मुख चाँद की तरह है।" तो कभी कोई बोलता है कि "तुम्हारा मुख चाँद के धब्बे की तरह है?" ऐसे कोई नहीं बोलता। This is not, this is stupid अगर कोई ऐसा कभी सोचे तो।

उसी प्रकार से भगवान् के भक्त हैं, अगर कुछ..., somehow कुछ हो भी, तो भी हैं वो भक्त और भगवान् उनके भक्ति के कार्यों के ऊपर पूर्णतः मुग्ध रहते हैं। जैसे पुरुष होता है स्त्री के ऊपर पूरी तरह मुग्ध रहता है, कामुक पुरुष। उसी प्रकार से भगवान् अपने भक्तों के गुणों पर पूरी तरह मोहित रहते हैं..., मोहित। पागलपन की हद तक..., सोचो।

यदि कोई व्यक्ति भगवान् के भक्तों की निन्दा का श्रवण भी करता है, तो उसकी जो पहले की सुकृति होती है, उसका नाश हो जाता है, और पतित हो जाता है फिर। अब हमारे प्रारब्ध में कई चीज़ें हैं होनी, परन्तु यदि हम निन्दा श्रवण करेंगे तो जो अपराध होना हो वो नहीं होगा..., नाश हो जाएगा। चाहे प्रारब्ध में भी हो। और कई चीज़े नहीं होनी हैं, वो भी हो जाएँगी हमारे प्रारब्ध न हो तो भी। भगवान् की कृपा, भगवान् के संतो की कृपा से शक्तिशाली, nothing is powerful than Guru and Gauraṅga's Blessings, Mercy..., there is nothing powerful than that.

अगर हम किसी का दोष देखते हैं तो हमारा present तो खराब हो गया, हमको किससे जुड़ना था? भगवान् से, आनन्द से, इसलिए जुड़ना चाहते हो न? और जुड़ किससे गए? दोष से। तो, you are abusing your present because of someone's past. क्या, क्या हमारी, हमारी बेवकूफी की कोई, कोई किताब पूरी कर सकता है क्या? ऐसी-ऐसी stories हैं हमारी बेवकूफी की। We are abusing our present because of someone's past, किसी के भूतकाल के कार्य की वजह से मैं अपना भविष्य पूरा विनाश कर रहा हूँ, क्योंकि अगर मैं negative सोचूँगा तो मैं, सेवा तो नहीं है वो, तो सेवा नहीं है तो जीव खुश ही नहीं रह सकता। और खुश रहना चाहते हैं तो महाप्रभु ने क्या बताया है-

"तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुणा,
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला १७.३१,
श्री श्री शिक्षाष्टकम् ३)

मान देन, मान दो। अरे, आप दोष देख रहे हो तो मान कैसे दोगे बताओ? आप तो दोष देख रहे हो। बोलो, "मैं शब्दों से मान दे दूँगा।" तो शब्दों से भगवान् ने बोला है शब्दों से *मान देन,* वाचिक *मान देन* बोला है क्या? "मैं तो बड़े आराम से, मैं तो Blessings दे दो बोलता हूँ।" अरे... भाई, यह तुम किस से बोल रहे हो? मुख से। भगवान् कहते हैं, हृदय से मान दो। दोष देखने वाला व्यक्ति मान नहीं दे सकता किसी को, भक्त को, उस व्यक्ति को जिसमें दोष देख रहा हो, चाहे शरीर उसका प्रणाम कर देगा, मान नहीं दे रहा वह। यह भक्त तत्व को अच्छी तरह समझना बहुत ज़रूरी है, अगर आप भक्त बनना चाहते हो। भक्त तत्व में आता है मान देना?

आप negative सोच रहे हो, दोषों को बार-बार सोच रहे हो और बोलते भी हो, "मैं... मैं..." Committed devotee नहीं हो, complaining devotee हो। हर समय बस दोष देखते हो पटर-पटर... पटर-पटर बस।

भक्त लोग दोष देखना बंद हो जाएँ, बंद कर दें, तो Mentors तो बिल्कुल unemployed हो जाएँगे। उनको सारा करना ही क्या है, हम दोष देखते हैं, वो solve करना होता है। यह तुम क्यों नहीं भक्त बन जाते, तुम्हारी problem सारी यही है कि you are not a Devotee! Why don't you become a Devotee? A Devotee has no problem. The only problem is you are not a Devotee. वही बोल रहे हैं, become a Devotee, become अदोषदर्शी, दोष क्यों देखते हो भाई? तुम्हारे गुरु दोष देखते हैं? कौन, भगवान् दोष देखते है? कौन दोष देख रहा है? तुम देख रहे हो? कौन-सी परम्परा के हो? शिशुपाल के वंशज हो क्या?

हम दृष्टा हैं, दृष्टा। देख रहे हैं scenes को, अगर किसी का दोष आया तो आकर चले जाए, तुम scene, आया-चला गया। दृष्टा बनकर रहो न, तुम चिपक क्यों, why you paying attention to someone's दोष, flaw? तुमको ध्यान क्यों देना है? भगवान् ने बोला है, *"मन मना..."* भगवान् कहते हैं मेरे पर ध्यान दो, मेरे भक्तों के गुणों पर ध्यान दो। तुम भक्तों के अवगुणों पर ध्यान देते हो, बताओ। और किनके? जो संसार को पवित्र करने वाले हैं।

जब नित्यानन्द प्रभु भी इस पृथ्वी पर आए थे तो उन्हें कोई भगवान् नहीं समझ पाया था, जब कोई ६५ की उम्र में आकर, सन्यास लेकर छोड़ के, दो शादी कर लें, उसे भगवान् मानोगे आप? नित्यानंद प्रभु, *जय हो गौरा निताई...* जब वो हैं नहीं सामने तो *गौरा-निताई, गौरा-निताई* कर रहे हो, जब सामने खड़े होते तो तुम उनके भी दोष ही कर रहे

होते... "बताओ यह भगवान् हैं? यहाँ ६५ साल की उम्र हो गई, सन्यास ले लिया, सारी दुनिया प्रचार कर रहें और खुद भोग में जा रहे हैं। दो शादी, एक भी नहीं..., दो से ही कर ली, पहले एक से की और दूसरे को बोला 'तू भी आ', यह तुम्हारा हाल है।"

जब संत चले जाते हैं, तो हाँ, "जय हो महाराज, स्वामी जी,बाबाजी।" अरे, भाई जब सामने हैं तो तुम्हें समझ नहीं आता।

यह जो बात है, यह किसी स्वामी, महाराज के लिए नहीं बोली गई- 'दोष नहीं देखना'। किसी जीव में दोष नहीं देखना है, किसी में भी। इससे क्या होगा? स्वयं का कल्याण। उस पर favor नहीं है। आप अपना, आप दोष देख रहे हो तो आप अतिस्नेहपूर्वक आचरण, अपना स्वभाविक आचरण कैसे कर पाओगे? *मान देन* कैसे... how can you do *अमानिना मानदेन*...? अगर आप किसी में negative सोच रहे हो, किसी के बारे में, उनके साथ कैसे रह कर सेवा कर सकते हो?

भक्त कभी भी नहीं ऐसा सोचता - "इनको ऐसा होना चाहिए, इनको ऐसा करना चाहिए था।" हमारा तो हर समय, यह वाली..., यह वाली tape recorder हमारे अंदर हमेशा ही बज रहा होता है। यह दो line का tape recorder. होता है न, 'हरे कृष्णा' का tape recorder? होता है वो नहीं, हमारा यह- "इनको ऐसा होना चाहिए, इनको ऐसा करना चाहिए था, इनको ऐसा नहीं करना चाहिए था।" बस। हर समय यही tape recorder चल रहा है...। अपने पत्नी के सम्बन्ध में, अपने बच्चों के सम्बन्ध में... और नहीं तो भक्तों के सम्बन्ध में, आचार्यों के सम्बन्ध में, सबके सम्बन्ध में, "इनको ऐसा तो नहीं करना चाहिए था, इनको ऐसा करना चाहिए।" क्या कर रहे हो? यह... यह... यह सेवा है? तुमको दर्शन मिल रहे हैं,

"दर्शने पवित्र करो एइ तोमार गुण..."

भगवान् जिनके पीछे चलते हैं चरण धूली के लिए, स्वयं को पवित्र करने के लिए..., उनके दर्शन मिल रहे हैं और हम सोचें - "इनको ऐसा करना चाहिए।" कितना... कितना अपना नुकसान कर रहे हैं। हम सोच ही नहीं पा रहे। हम भागे जा रहे हैं, भागे। भक्त तत्व को समझें तो सही..., भक्त होता है अदोषदर्शी।

किसी के दोष देखकर हमें कोई लाभ नहीं है, पर किसी के गुण देखकर हम मालामाल हो सकते हैं। किसी भक्त के गुण देख लो, उस पर चिपक जाएँ, चिपक गए बस। और वो तुम्हारे पर आकर रहेंगे वो गुण, आकर रहेंगे हमेशा।

कई बार होता है कि, "हाँ मैं इन से क्यों सुनुँ, इनके आचरण में..., मुझे नहीं लगता, मैं इनसे नहीं सुन सक... सुनना चाहता।" अरे भाई! Doctor Trehan के पास तुम heart इलाज, heart का इलाज कराने गए, उससे पूछते हो, "तुम्हारा heart ठीक है कि नहीं? कि तुम सिगरेट क्यों पी रहे हो?" तुम्हारा काम हो रहा है न? तुम अपने काम से, why are you not focussed? तुमको..., "यह क्यों कर रहा है? वो क्यों?" तुमने करना क्या है सारी दुनिया का? जगत की चिंता जगत-पति करेंगे, तुम अपनी चिंता करो। तुम बस स्नेहपूर्वक आचरण, negative मत सोचो। Just shut up! बोलो, "मैं तो बोल ही नहीं रहा।" तुम्हारे अन्दर तो chattering चले जा रही है हर एक के बारे में, why don't you shut up?

मौन..., मौन..., *"मौनम् शिक्षयेत्"* ११वें स्कन्ध में बताया गया, मौन की शिक्षा लो। क्या होती है मौन की शिक्षा? बोलते हैं, बोलना मौन की शिक्षा..., चुप रहना मौन की शिक्षा नहीं, भीतर को चुप कराओ। मुझे सब गुणों को देखना है और वो गुणों को अंगीकार करना है, बस... मुझे और कुछ नहीं करना। मुझे भक्त बनना है, मुझे नहीं सारी दुनिया को देखना।

बोलो, "हमारे गुरु जी की सेवा है।" अच्छा, गुरु जी ने आपको सेवा दे दी है आप सिर्फ़ गुण देखो और कुछ और किसी के दोष मत देखो। अब सेवा मिल गई, अब समझ आती है सेवा? अच्छा किसी के दोष..., स्वप्न में भी मत सोचो। अब सेवा समझ आ रही हैं? बोलो नहीं मिली, अब मिल गई? अब समझ आ रही है? इतना... इतना... इतना हृदय रोता है, क्रन्दन करता है देखकर कि इतनी उत्तम साधना मिलकर, इतने अच्छे... उसके बावजूद भी दोष देखकर अपना...

"ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।"

(गीता-२.६२)

गीता बोलती है - ध्यान करते हो जिस चीज़ का..., जिस चीज़ का निरन्तर ध्यान करोगे, वो तुम्हें प्राप्त हो जाएगा। अब देखो एक व्यक्ति है रोज़ market से जाता हो, चाहे शराब की दुकान हो, उसको कोई शराब से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। पर एक बार वह ध्यान करना शुरु करे, "हाँ देखें क्या-क्या है।" सोचें, बार-बार ध्यान करें, फिर क्या होगा थोड़े दिनों बाद? ध्यान परिवर्तित हो जाएगा वो चीज़ उसमें आ जाएगी। उसी प्रकार से अगर हम अवगुणों के बारे में सोचेंगे, तो वही चीज़ हम में आ जाएगी। कोई बचा नहीं

सकता। कोई बोले, "दोष दिख रहे हैं हम क्या करें?" बताओ, शराब दिखती है तो क्या करते हो? उसे नहीं छूते। सिगरेट दिखती है क्या करते हो? उसे नहीं छूते। दोष दिखते हैं क्या करो? उसे मत छुओ..., इसमें कोई PhD करनी है क्या बताओ? Thesis करनी है इसमें कोई? दिखे तो क्या करें, मत छुओ। कितने सारे लोग बेच रहे है सामान क्या करते हो? जो... जो चीज़ नहीं चाहिए, क्या करते हो? हमें नहीं चाहिए, बोल दो - "हमें नहीं चाहिए।" कितना simple solution है...

Actually there is no problem, problem is you think there is a problem and that is a problem. There is only one problem you are not a Devotee, you become a Devotee then there is no problem. Problem is you are so stupidly engrossed in human emotions... irrationally absorbed in human emotions.

"जिधर देखूँ तत् श्याम ही श्याम दिखाई दें"..., सुना हुआ है? जिधर देखूँ? हम कहेंगे - "जिधर देखूँ तत् दोष ही दोष दिखाई दे।" बताओ। "मैं तो जो सोचती हूँ वो गलत देखती हूँ।" यह तुम, यह तुम किसके वंशज हो भाई, यह तो बता दो। ८४,००,००० योनियों में हो या ८४,००,००१ योनि में हो? शिशुपाल। क्या हो?

और व्यक्ति दोष तभी देखेगा जब वह joy shaft में नहीं रहेगा। तो हमारे पास अनगिनत reason हैं, इस दिव्य आयोजन "करम" मंदिर में तुमको सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। यह reason sufficient है हर समय joy..., मुझे self-purification का इतना बड़ा मौका मिल रहा है। यह reason sufficient है joy shaft में रहने के लिए। सेवा का अवसर मिल जाए किसी को और व्यक्ति वो joy shaft में न हो, तो वो सेवा ही नहीं है।

मैं इतने सालों से हूँ मेरे को कभी भी नहीं लगा कि - "यह तो मैं रोज़ ही कर रहा हूँ।" मैं तो..., मैं तो कोई भी चीज़ करता हूँ इतना अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ। "मुझे इतना मौका मिल रहा है सेवा में जुड़ने का।" अभी भी वही..., वही feeling है जो २० साल पहले थी, रत्तीभर बदल..., बदलाव नहीं हुआ। मैं महाप्रसाद को देखता हूँ अभी भी वही feeling आती है जो २० साल पहले...। यह नहीं आता कि, "यह... तो हम... तो हम रोज..." ऐसा नहीं। "यह तो हमे मिलना चाहिए।" ऐसा नहीं है। प्रसाद देखकर वही feeling आती है जो आज से..., कभी भी आई है, कोई भेद नहीं है। हम अपने आपको अयोग्य मानते है महाप्रसाद मिल रहा है हरि की इतनी विशेष कृपा है। *"जिधर देखूँ तत् श्याम ही श्याम दिखाई दे"*

यदि हम..., अगर हम दोष देख रहे हैं तो होता क्या है? दोष अपने बराबर वाले भक्तों में देखते है सबसे जल्दी... जल्दी, सब बराबर... उसके बाद धीरे-धीरे हम Advanced होते हैं, Advanced अपराधी होते हैं। फिर अपने वरिष्ठ भक्तों में देखना शुरु करते हैं। फिर कई बार हम super advanced भी हो जाते हैं, फिर हम गुरु के ऊपर। वैसे दोष देखना ऐसी चीज़ है कि अगर एक बारी शुरु करेंगे तो गुरु पर आकर ही खत्म होगी। यह ऐसा गुण है यह।

हम बोलते हैं कि, "हम इसे learn नहीं करेंगे जी। भाई यह प्रवचन, यह जी पालन नहीं कर रहे जी... हमसे नहीं होता।" तुम तो बहुत ही advanced हो, भगवान् के एक अवतार को 'दत्तात्रेय' कहा जाता है उनको, वह जड़ वस्तुओं से भी learn करते थे और तुम, जो दुनिया को पवित्र कर रहे हैं उनसे भी तुम learn नहीं करना चाहते। यह तुम्हारी उन्नत अवस्था है। दत्तात्रेय जो थे, वो पेड़ से learn करते थे, tree, वृक्ष से, जल से learn करते थे..., वो चूड़ियों तक से learn कर लेते थे..., जो जड़ है। और हमसे संतो से भी learn नहीं होता... उफ़! उफ़! हम क्यों ऐसे...? बताओ..., कीचड़ में पड़ा हुआ व्यक्ति हीरा उठा लेता है। यहाँ तो संत कथा दें तो, तो हमें भाग्यवान मानना चाहिए कि हमें सुनने का अवसर मिल रहा है। यह इतनी दुर्लभ हरि कथा है यह जो आज सुन रहे हो शायद ही किसी ने इस प्रकार से सोचा होगा।

अपने बालकपन को..., अपने child like, child like innocence को मत छोड़िए, बालकवत् रहिए, भीतर से। बालक को कोई भी अच्छी, कोई चीज़ प्राप्त होती है तो वो कितना खुश हो जाता है, कभी सोचता किसी के भी दोष के बारे में बालक? इसलिए ११वें स्कन्ध में बताया है *बालकवत्* रहो। एक दम *बालकवत्,* बाल। बच्चा कभी किसी में दोष नहीं देखता, वह हमेशा खुश रहता है, joy shaft में। Toffee मिलेगी तो खुश, वो हमेशा खुश..., बालक वत्।

और एक बार हमें दोष देखने की खराब आदत हो जाए, तो जैसे हम joy shaft बनाते हैं joyous चीज़ो को याद रखकर, joy shaft, वैसे हम pain shaft बनाते हैं, वैसे हम दोष shaft भी बनाते हैं, fault shaft. ऐसी बड़ी-बड़ी shaft बनाते हैं। एक बात पता चले सारी की सारी चीज़े जोड़ लेंगे, जो है भी नहीं। बोलते हैं, "मुझे आज भी याद है २० साल पहले यह बोला था।" अरे तुमने क्या करना है? दोष shaft! यहाँ तुम भक्ति करने आए हो तुमने क्या-क्या manufacturing करने बैठ गए?

अपने ऊपर करुणा करें, दोष देखना है अपने ऊपर torture करना। स्वप्न में भी किसी के बारे में गलत मत सोचें। क्योंकि आप तो self-purification के लिए आए हो न? आप यह बात क्यों भूल रहे हो? आपको superintendent या पुलिस थोड़ी न बनाया गया है कि सबको देखते रहो कौन क्या कर रहा है। Forget मंजरी, यह तो आत्मा के platform पर आने की बातें हैं - दोष। जो व्यक्ति दोष देख रहा है वह आत्मा के platform पर नहीं आया अभी तक, मंजरी बनना तो बहुत दूर की बात है।

एक बात बताओ, वो भजन सुना था अभी, आप लोग की understanding देखोगे सबने भजन कितनी बार गाया हुआ है-

"तोमार हृदये सदा गोविंद विश्राम।
गोविंद कहेन मम् वैष्णव पराण।।"

(प्रार्थना १९ - श्रील नरोत्तम दास ठाकुर)

आपका जो हृदय हो, हृदय में जो रहता हो, उसके प्रति अगर कोई बोले कि, "मेरे से तो अपराध हो गया", तो भगवान् माफ कर देंगे, क्या लगता है? क्या लगता क्या है? अगर किसी संत के प्रति..., आपको क्या लगता है? क्या लगता है? हाँ? न? क्यों? मैं आपको scientifically समझाऊँगा, भूलोगे नहीं आज के बाद कभी इस बात को, क्यों? भगवान् के भक्त के प्रति अपराध करें, भगवान् माफ क्यों नहीं करेंगे? आपको भगवान् बना दिया जाए, सदाकृष्ण ठीक है? बोले जी आप भगवान् हो, आप जिसको प्यार करते हो उसके प्रति कोई गलत बोले आप से बर्दाश्त होगा? भगवान् भी तो व्यक्ति हैं कि नहीं? भगवान् कोई concept नहीं हैं। भगवान् is a person, He has feelings. उनके हृदय जो है, भगवान् के भक्त का हृदय जो है, उसमें भगवान् रहते हैं और भगवान् के हृदय में भक्त रहते हैं। दोनों एक दूसरे के हृदय में रहते हैं। बोलते हैं मेरी जान है यह, तो भगवान् की जो जान है - वे भक्त हैं।

हाँ, आपसे अगर किसी का बहुत close सम्बन्ध हो, तो आप क्या बोलोगे? "थोड़ा-बहुत अपराध कर दें, मैं तो माफ़ कर देता हूँ।" ऐसा कभी होगा? कोई व्यक्ति माफ करेगा, अगर कोई बहुत close सम्बन्ध हो तो?

ऐसे मैं नाम लेकर नहीं बोलना चाहता, जैसे मान लो आपके पत्नी के प्रति या आपके बच्चे के प्रति कोई बद्तमीज़ी कर दे, आप २० साल भी याद रखोगे कि नहीं? "उसने बोला था मेरी पत्नी को..., ख़बरदार! कभी सामने आए।" ऐसा बोलोगे न? अब आपके माता के प्रति कुछ..., कोई गंदी..., गलत बात बोल दे, छेड़ खानी कर दे तो क्या

करोगे? अच्छा नहीं लगेगा न, याद रहेगा हमेशा। भगवान् को भी ऐसे ही है, "अरे, मेरा हृदय है।" भगवान् कहते हैं,

"साधूनां हृदयं मह्यम्, साधूनां हृदयं त्वहम्।
मदन्यत्ते न जानन्ति नाहं, तेभ्यो मनागपि।।"

(श्रीमद् भागवतम्-९.४.६८)

"मेरा हृदय है", वों कैसे उनके प्रति अपराध सहन कर लेंगे भगवान्? बताओ, कमाल की बात है, असहनीय है। थप्पड़ और..., भगवान् खुद रोड़े अटकाएँगे , तुम भक्ति न करो, तुम अगर अपराध करोगे भगवान् के भक्तों के प्रति।

अब कोई बोले "अब तक हो गए है, तो अब क्या करें?" तो हम..., दोषों की factory, हर एक के प्रति खोली हुई है। एक... अनेक... दोष shaft एक नहीं अनेक दोष shaft हैं। हर भक्त की हमने विशेष-विशेष दोष shaft बनाई हुई हैं। उस भक्त का चिन्तन करते हैं उनकी दोष shaft में घुस जाते हैं। यह बहुत भयंकर कार्य है। पूर्व, पूर्वकृत सुकृतियाँ सब नष्ट हो जाएँगी।

बात समझें कि आपकी..., आपकी बहन के प्रति कोई कुछ बोलेगा, सहन कर लोगे? आप सहनशील नहीं हो, तो भगवान् सहनशील होंगे क्या? आपका तो प्रेम भी नहीं है बहन से तो भी आप सहनशील नहीं हो, भगवान् का तो प्रेम होता है अपने भक्तों से, वो सहनशील होंगे क्या, बताओ? हमारा कोई किसी से प्रेम नहीं है, अपने बच्चों..., मतलब का सौदा है फिर भी हम से सहन नहीं होता है। जो भी आकर्षण, attachment जो भी है, समझ रहे हो बात? उनका तो वास्तविक प्रेम है अपने भक्तों से, कैसे सहन करेंगे बताओ? व्यक्ति है न भगवान्, concept नहीं हैं समझो बात को, नहीं सहन कर सकते। और किसी के गुण देखने के लिए हमारे को थोड़ा रिक्त..., खाली होना पड़ेगा, तुम तो गुण, तुम अपने self-glorification और self-appreciation से तुम्हारे को फुरसत नहीं है। "मैं कितनी अच्छी हूँ, मैं तो ए कित्ता, मैं ते ओ कित्ता, ओन्ने ऐन्ने कित्ता, ओन्ने ए कित्ता, मैंने ए कित्ता।" बस यही..., यही दिन-रात का यही तानपुरा बज रहा है, "ऐन्ने ए कित्ता, ओन्ने ए कित्ता", क्या कह रहे हो तुम? What is this? Self-glorification से, self-appreciation से बाहर निकलेंगे तभी तो किसी के अन्दर गुण देखेंगे आप। आप अपने गुणों से ही मोहित, विमोहित हो। मैं, absorbed, ectasy, मैं अपने गुणों की, अवगुणों की। Self-glorification, self-appreciation से हटो। पर-सुख को निज-सुख मानना..., हाँ... हृदय is full of self-glorification, self-glorification, your हृदय should be

full of self-purification, I want to purify myself that's all! That's all I want. I want to purify myself.

अगर हम हृदय से किसी में दोष देख रहे हैं, और उसके सामने आकर बोलते हैं, "प्रभुजी, आप बड़े अच्छे हो। माताजी, आप बहुत अच्छे हो।" तो वो vibes तो negative ही जा रही हैं, शब्द कुछ और जा रहे हैं आपके। एक चीज़ जा रही है पूरब की ओर, एक जा रही पश्चिम की ओर, आप बीच में खड़े होकर पता नहीं कौन सी ओर जा रहे हो। तो जब ऐसे करोगे तो दूसरे व्यक्ति को साफ़ पता चल जाएगा, जो अच्छा बोल रहे है वो flattery कर रहे हो। उसमें शक्ति नहीं है न, उसमें सत्यता नहीं है, उसमें कृष्ण नहीं हैं।

भागवत् के प्रथम श्लोक में बताया गया है *"सत्यम परम धीमहि"*, मैं परम सत्य का ध्यान करता हूँ। तुम जब सत्य ही नहीं बोल रहे, तो उसमें कृष्ण नहीं हैं। उसमें झूठ है। उसको साफ़ पता चल जाएगा। वो शक्ति नहीं है तुम्हारे शब्द में। तुम्हारी flattery कर रहे हो, अगर तुम अन्दर से दोष सोच रहे हो किसी के बारे में और भक्त को बोलते हो, "प्रभुजी आप यह..." This is flattery.

आप कहते हो आपको..., आप जब किसी से बात, आपको क्या चाहिए? वो प्रेमपूर्वक आपसे बात करे, और तो कुछ तो नहीं चाहिए, और कुछ चाहिए? नहीं। वो करने के लिए आपको बीज कौन सा बोना हैं? अतिस्नेह का। तो ही आपको..., आप अगर दोष देख रहे हो तो आपके साथ कोई प्रेम नहीं कर सकता। एक व्यक्ति प्रेम नहीं कर सकता। Negative जा रही हैं vibes, तो प्रेम करने के लिए positive को आना होगा। तो positive तो आ ही नहीं सकती, जब जा negative रही हैं तो।

बात की गम्भीरता को समझो, इसका..... deepness... science है, science, भक्ति हमेशा से science है। आपको लग रहा है कोई भी हम कहानियाँ सुना रहे कहीं की कि- "राजा प्राचीनबर्हि ने किया..." आपने क्या करना है प्राचीनबर्हि ने कुछ भी किया हो, आपको तो अपने से मतलब है। जो व्यक्ति दोष देख रहा है उससे कोई प्रेम नहीं कर सकता। और चाहे उससे कोई प्रेम नहीं करेगा तो दुःखी तो रहेगा सही, हर जगह उसे कोई प्रेम नहीं कर..., एक व्यक्ति भी प्रेम नहीं कर रहा। तुम्हारा दोष देख रहे हो, negative vibes जा रही हैं तुम्हारे से।

तुम भक्तों के सामने आते हैं क्यों हम एकदम से पवित्र हो जाते हैं? उनकी Positive vibes की बाड़ चल रही होती है उस समय। समुद्र चल रहा होता है Positive vibes का।

Positive भी नहीं Divine vibes का..., अतिस्नेहपूर्वक। अतिस्नेहपूर्वक - Divinity को कहते हैं, वही हमारे अन्दर संक्रमित हो जाती है। भक्त खुश हैं, अपने..., क्योंकि उनमें वो गुण हैं - "अदोषदर्शी", हमारे को भी, अगर हम खुश होना चाहते हैं तो हमें भक्त बनना पड़ेगा। Alternative ही नहीं है, alternate नहीं है, दो नहीं हैं alternate। वो बोले, "मैं भोग लगाकर..." अरे...! यह तो छोटी सी बात है, यह प्रसाद, तो तुम मर... मर भी रहे हो तो भी कुछ और नहीं खाना चाहिए। "मैं शादी में खाता हूँ।" शादी में तुमको..., purification... purification हो रही है शादी में खाना खाकर? दूध पीलो, फल खालो, कुछ भी कर लो, harmless! पर, "मैं रोटी खाऊँगा, छोले खाऊँगा।"

हमें भक्तों के गुण देखना चाहिए, कि यह देखिए कितने अच्छे भक्त हैं, यह सुबह ३:३० बजे उठ जाते रोज़, चाहे रात को १ बजे भी सोए, यह गुण पर हमारा ध्यान नहीं जाता। यह देखो भक्त कितने अच्छे हैं, यह इतने सालों से निरन्तर गुरुजी की सेवा कर रहे हैं। कई बीमारियाँ..., इतनी ज़्यादा फिर भी गुरुजी से, हमारा गुणों पर ध्यान नहीं जाता। इन्होंने पूरी अपनी जवानी दे दी है, हमको इनमें फिर भी flaw ही नज़र आते हैं, flaws नज़र आते हैं। जवानी देना छोटा गुण नहीं है। हम तो अपना बुढ़ापा भी नहीं दे पा रहे हैं इतने पतित है हम। ४० के बाद, होने के बाद नहीं दे पा रहे हैं अपना, अगले ने २० से पहले भी दिया, छोटी बात है? छोटी बात है? तुम उनमें flaw देख रहे हो। तुम ५० के हो गए, तब तुमसे अपना कुछ नहीं दिया जाता, वो पूरी जवानी समर्पित करके सेवा कर रहे हैं, चाहे थोड़े बहुत flaw है तो क्या हुआ? जब सोना..., when it is heated तो whatever the impurities, they go away... they go away... इतना सुन्दर कोई cooking करता है, भगवान् के लिए १०-१०, २०-२० चीज़, तो हम को यह, हम को यह देखना चाहिए। वो गुण मुझ में आए। सब छोड़ के बिल्कुल एकान्त में, सब कुछ छोड़ के पूरी भगवत् सेवा में रत हैं, यह चीज़ नज़र नहीं आता। हम उनको flaw देखते हैं। कितना सुन्दर कीर्तन करते हैं, इतना अध्ययन में रुची है, कौन-कौन से ग्रन्थ नहीं पढ़े, कितने गुण हैं। हम कोई चीज़ को ध्यान नहीं करते, गुण shaft नहीं बनाते, दोष shaft बनाते हैं। और अपना ही नुकसान करते हैं।

कई बारी लोग जो दोष सोचते हैं वो दोष नहीं वो गुण होते है वास्तव में, गुण होते हैं। जैसे कि हमारे गुरुजी के सम्बन्ध में कई लोग बहुत गलत बोलते हैं, वो बोलते हैं, "ऐसे पाँव करके गुरुजी खड़े हैं, ऐसे कोई थोड़ी न पाँव करके, कोई भी ऐसे कर लो, यह तो अहंकार की बात है।" कई लोग ऐसा सोचते हैं। मुझे पता है न मेरे गुरु क्या हैं। मैं तो एक बार किसी को बहुत ठीक कर दिया था। अरे, वो करुणावश तुम्हारे पर कृपा कर रहे

हैं! तुम्हारे को अपने चरण छूने देने रहे हैं, तुमको उसमें भी flaw नज़र आता है। तुमको कोई अकल नहीं है? मुझे मालूम है न गुरुजी क्या हैं। तुम्हें थोड़ा मालूम है। धाम में रह रहे हैं ३०-३० साल से, यह हालत है, उसके बाद यह understanding है।

जैसे हमारे यहाँ, कई लोग सोचते हैं - 'यह सब कुछ पूछ कर करना।' बताओ, हमारे पर favor कर रहे हो क्या? तुम्हें अकल नहीं है? यही तो बता रहे हैं, सही तरह करोगे, पूछो, पूछोगे... force थोड़ी न है किसी का, यह इतना बड़ा गुण है, इतना बड़ी तपस्या है। एक भक्त के लिए क्या तपस्या होगी, अपना भजन छोड़कर वो हमारे छोटी-छोटी चीज़ो को solve करें, इससे बड़ी तपस्या कोई संसार में दूसरी नहीं है। एक व्यक्ति आनन्द से जुड़ा हो, उसको अगर छोड़ना पड़े इस फाल्तू के..., यह समस्याओं को..., हमारी समस्या solve करने के लिए। तो गुणों को दोषों के रूप में भी देखना, इस प्रकार भी होता है।

भक्त कभी भी यह नहीं सोचता कि इनको ऐसा करना चाहिए, उनको ऐसा करना चाहिए, इनको ऐसा करना चाहिए था, वो किसी की भी script नहीं लिखता एक second के लिए भी। वह सिर्फ़ अपनी script लिख..., "मुझे ऐसा करना चाहिए, मुझे ऐसा होना चाहिए।" बस। भक्त को सिर्फ़ एक ही चीज़ से मतलब है कि - 'मैं ठीक हो जाऊँ, मैं बहुत बीमार हूँ, मैं ठीक हो जाऊँ।' दूसरे से मेरे को नहीं, मैं किसी का गुरु तो हूँ नहीं, अगर मैं किसी का गुरु नहीं हूँ और न मैं भगवान् हूँ, तो किसी जीव की चिंता या गुरु करें, या गौरांग करें, मैं क्यों अपनी बीच में...?

अपने ऊपर करुणा करें, अपने ऊपर torture करना बंद करें, किसी का दोष के बारे में सोचकर। सच भी है तो भी हमें नहीं बोलना क्योंकि अगर सूचना भी दे रहे तो वो दोष हम में संक्रमित हो रहा है। श्रवण कभी मत करें और भक्तों के साथ रहना तो बहुत dangerous है। मेरे को तो कई बार डर लगता है, कई लोग..., अरे क्यों रह रहे हो भाई? अगर सही तरह नहीं रहोगे तो बहुत नुकसान कर लोगे।

आप लोगों ने एक बात सुनी होगी, फिर से बता देते हैं। जो भक्त होते हैं वो प्रार्थना करते हैं कि मेरा जो..., अगर दोबारा जन्म हो तो मैं, ऐसे घर में..., नाली के कीड़े के रूप में जन्म ले लूँ जहाँ पर भक्त प्रसाद पाते हों क्योंकि वह प्रसाद पाएँगें, हाथ धोएँगें, कुल्ला करेंगें तो जो नाली से जाएगा, वो मेरे को छू जाएगा तो मेरा purification हो जाएगा, मेरा purification... इसलिए वो नाली का कीड़ा बनकर..., सभी भक्त सदैव प्रार्थना करते हैं भगवान् से, क्योंकि यह तो हर कोई मानता है कि मैं भगवान् का भक्त

नहीं हूँ... तो मेरा अगला जन्म होगा यह मानते हैं। तो क्या मानते हैं कि मुझे मनुष्य जन्म दे दो? मुझे नहीं..., मुझे आप नाली का कीड़ा बना दो भक्त के घर का। यह नहीं बोलते - आचार्य के घर का..., नहीं। भक्त के घर का। फिर वो..., भक्त जो प्रसाद पाता है, उसका झूठा प्रसाद... कुल्ले का मुझे, मेरे को छू जाए इससे बड़ी क्या बात है, यह है भक्त की महत्वता और हम कुछ भी बोल देते हैं।

भगवान् इस संसार में कृपा करने के लिए, भगवान् की करुणा जो है..., कृपा कैसे? हम भगवान् की करुणा, कृपा चाहते हैं? भगवान् कृपा direct नहीं करते संसार में, यह बाबा के वाक्य सुन लो अगर समझना चाहते हो। बाबा क्या कह रहे हैं?

हरि की साक्षात् करुणा जो है, वे गुरु और वैष्णव की मूर्ति धारण करके इस संसार में विचरण करती है। भगवान् की करुणा की जो मूर्ति होती है न, वही गुरु और वैष्णव। वे मूर्तिमान विग्रह हैं करुणा के जिसमें हम दोष देखते हैं। बताओ? महारौरव नहीं मिलेगा तो क्या मिलेगा? गोलोक थोड़ी न मिलेगा ऐसे दोष देख कर किसी के..., किसी के भी नहीं देखने होते दोष, किसी के... सबसे पतित व्यक्ति हैं उसके भी... आपको Dawood Ibrahim के भी दोष नहीं देखने, आपने करना क्या है उसका? आपने क्या, वह कुछ भी कर रहा हो। आपने..., आपका क्या मतलब हैं? आप अपने से मतलब रखो, आपको purification करना है। आपको गुरु-गौरांग की सेवा से हर समय जुड़े रहना है। आपको अवकाश..., छुट्टी कहाँ है आपको यह वेल्ले काम करने की।

भगवान् की करुणा की जो मूर्ति बना लो, उसे कहते हैं 'गुरु और वैष्णव', करुणा की मूर्ति। बोलते हैं 'कृपा चाहिए।' अरे, वही जो तुम देख रहे हो, उसे ही कृपा कहते हैं, वो देखना ही कृपा है। बात हो गई तो इतना बड़ा..., वो तो कृपा ही है वो दर्शन करना भी। और यह गुरु के सम्बन्ध में नहीं बोला जा रहा है, यह वैष्णव के सम्बन्ध में बोला जा रहा है। वो हमारे गुरुजी, गुरुजी को..., कई बारी एक बीमारी होती है गुरुजी के अलावा किसी की respect ही नहीं करनी। सबकी respect करें, किसी में दोष नहीं देखें।

"कि रुपे पाइबो सेवा मुइँ दुराचार।
श्री गुरु वैष्णवे रति ना हैलो आमार,
श्रीगुरु वैष्णवे रति न हैलो आमार।।"

(प्रार्थना २० - श्रील नरोत्तम दास ठाकुर)

दोष, दोष दृष्टि हैलो आमार, वैष्णवों में रति न हैलो दोष दृष्टि हैलो। लिखा हुआ है, "अदोषदर्शी" प्रभु, आप अदोष..., आप तो दोष देखते नहीं हो, मुझ पर कृपा करो...

देखिए, अगर हमने..., हमारे साधन-भजन की आवश्यकता न होती तो भगवान् गुरुजी को बोलते - "इनके मन में ज़बरदस्ती प्रेम दान कर दो।" ऐसा नहीं होता, ज़बरदस्ती यह न भगवान् करते हैं, न यह गुरुजन, कोई भी नहीं करता। वे science बताते हैं, science.. कि ऐसा करोगे तो तुम ठीक हो सकते हो। तुम बहुत बीमार अवस्था में हो। तुम्हें भूत चढ़ा हुआ है। पिशाच, पिशाची अवस्था... अगर भूत न चढ़ा हो, तो आप लोग सब अलग-अलग बात में... आत्मा हो न सब? तो एक ही बात सब अलग-अलग बोलते हैं न? अलग भूत, अमित का भूत है, यह वरुण का भूत, अलग-अलग..., निधी का भूत। बताओ, आपको अमित का क्यों नहीं भूत चढ़ रहा? एक ही, एक का भूत, निधी का भूत होगा, अमित का तो नहीं है? इस भूत रूपी जो आचरण है इसको हटाने वाले को बोलते हैं- संत, वैद्य। वो हमारे भूत का जो आचरण हमारा चल रहे हैं, बिल्कुल, संजीव की तरह सोचते हैं न? यही disease है। आप जो हो वही यह है, वही... आत्मा में कोई... कोई unique नहीं है कोई भी। वो बोले, "मैं unique हूँ।" Unique, unique नहीं है संजीव, कोई संजीव ही नहीं है पहली बात तो।

आप कहोगे, "मेरी बहुत बड़ी problem है।"

मैं कहूँगा, "आपकी..." मैं कहूँगा, "There is no problem."

आप कहोगे, "मेरी problem real नहीं है?"

"Forget problem, you are not real. You are soul."

सभी की एक problem है कि मेरे..., मेरे अन्दर भक्तों के गुण नहीं है, बस।

"तृणादपि सुनीचेन", यह श्लोक है, 'अपने को तिनके से भी अधिक पतित मानो, पेड़ से अधिक सहनशील।' जो worthy of worship हैं, जो संत *तृणादपि*..., कैसे होगा बताएँ, those who are worthy of worship, somehow we manage to see flaws, दोष, somehow... we have some kind of system to see flaws.

चिन्तन, चिन्तन..., सोचो तो सिर्फ़ अच्छा सोचो नहीं तो सोचो ही नहीं। मत... सोचो न..., सो जाओ इससे अच्छा... यही साधना है सो जाओ ज़्यादा, तुम ८-१० घंटे सो जाओ, गलत तो मत करो कम से कम।

अगर किसी में गलत भी देख रहे हो तो, तो यह देखना चाहिए कि यह मेरे को नहीं करना बस। मैं तो अपने घर में भी बहुत learn करता हूँ, क्या देखकर कि यह मेरे को नहीं करना। यह थोड़े न है कि सब चीज़ ग्रहण करो। यह ग्रहण करो कि यह मेरे को ग्रहण नहीं करना, या मेरे को ऐसे attachment करनी है भगवान् की सेवा से। देखते न, अपने बच्चों के लिए, पोतों के लिए कितना attachment होती है। "यह करो, वो..." हम यह करें कि, "काश मेरी यही attachment मेरी भगवान् से हो, मैं उनको ऐसे ही भोग लगाऊँ।" हैं न...? सीखना तो हम..., मोची से भी सीख सकते हो, हम यहाँ भक्त से नहीं सीखते। सीख तो मोची से भी सकते हो। Perfection के level पर करते हैं, कहीं से किसी से भी learn कर सकते हैं। इस संसार में पता है क्या learn करने वाली चीज़ें हैं? जैसे यहाँ पर संसार में माँ बेटे के प्रति, इतनी रहती है so-called प्रेम, वैसे ही उसी, इसी type का प्रेम उस जगत में, अध्यात्मिक जगत में..., गोलोक में रहता है, ऐसे समझ सकते हैं। यहाँ जैसे एक लड़का-लड़की के प्रति कितना आसक्त होता है, इसी प्रकार का attachment गोलोक में होती है राधा... बस यही समझने की बात है इस जगत से लेने का। बाकि इस जगत से लेने का कुछ भी सार नहीं है। ऐसी relationships होती है अगर soul को body न..., body न मिलें तो वो relationships को समझ नहीं पाएगा बिल्कुल भी कि relationships गोलोक में कैसी होती हैं? हमारे घरों में देखकर समझ लो कि ऐसे ही वहाँ घर होते हैं, माँ बाप होते हैं, पति होता है और हमारे को उन सबसे बच कर अपनी सेवा करनी होती है। मंजरी का पति भी होता है, सास भी होती है, ननद भी होती है, सब होते हैं, Escape route होकर service करनी होती है।

ठीक है। कोई..., I am through with the topic, किसी की कोई जिज्ञासा है, तो कर सकते हैं।